Toppersnotes
Unleash the topper in you

3rd – ग्रेड

अध्यापक

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

भाग 4

लेवल - द्वितीय

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	संज्ञाप्रकरणतः	1
2	प्रत्ययप्रकरणम्	4
3	संधिः	11
4	समासा:	18
5	शब्दरूपाणां	21
6	धातुरूपाणां	27
7	अव्ययानां प्रयोगः	32
8	उपसर्गा:	34
9	कारकप्रकरणम्	35
10	हिन्दीवाक्यानां संस्कृतानुवाद	39
11	अशुद्धिसंशोधनम्	43
12	संस्कृतसाहित्येतिहास	44
13	संस्कृत शिक्षण विधयः	48
14	संस्कृत शिक्षण सिद्धान्ताः	53
15	संस्कृत भाषाकौशलस्य विकासः	55
16	संस्कृतशिक्षणे – अधिगम, संप्रेषणस्य, पाठ्यपुस्तकानि	61
17	संस्कृतभाषाशिक्षणस्य मूल्यांकन	63

1 CHAPTER

संज्ञाप्रकरणतः

माहेश्वर सूत्रों को अक्षरसमाम्नाय या वर्ण समाम्नाय भी कहा जाता है। (अक्षरवेद / वर्णवेद)

चौदह माहेश्वर सूत्र अण् आदि प्रत्याहार की संज्ञा करने वाले हैं। इनके अन्त्यवर्ण इत् संज्ञक है जिनका अकार उच्चारण के लिये नहीं है जबकि हकारादि में स्थित अकार उच्चारण के लिये है।

व्याख्या – धातुपाठ, सूत्रपाठ (अष्टध्यायी), गणपाठ, उणादिपाठ, लिंगानुशासन, आगम, प्रत्यय और आदेश । ये आठ उपदेश कहे गये हैं इन सभी के अंतिम हल वर्ण की इत् संज्ञा होती है।

अनुवृति – अन्य सूत्रों से पदों को ग्रहण करना अनुवृति कहलाता है। जैसे – हल्न्त्रूम् सूत्र में हल् व अन्त्यम् दो शब्द हैं जिनका अर्थ हुआ अंतिम व्यंजन। इतने से सूत्र का पूर्ण अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। अतः वृत्तिकार ने उपदेशेऽननुनासिक इत् सूत्र से 'उपदेशे' और इत् दो पदों को ग्रहण कर लिया है।

1. **इत् संज्ञा सूत्र –**
   वृत्ति – उपदेशेऽन्त्र्रूं हल्त्स्यात् / उपदेश आद्योच्चारणम् / सूत्रे
   सूत्र – हलन्त्रूम् ।1 3 3।।
   व्याख्या – यह सूत्र उपदेश अवस्था में स्थित अन्त्रू हल् (व्यंजन) वर्ण की इत् संज्ञा करता है।
   सूत्र के आगे लिखी गयी संख्याएं क्रमशः अध्याय, पाद व सूत्र संख्या का ज्ञान कराती है। जैसे – हलन्त्यम् सूत्र अष्टाध्यायीा के प्रथम अध्याय`क तृतीय पाद का तृतीय सूत्र है।
2. **सूत्र** – उपदेशेऽजनुनासिक इत्।
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में अनुनासिक अच् की इत्संज्ञा करता है।
3. **सूत्र** – चुटू
   व्याख्या – यह सूत्र उपदेश अवस्था में स्थित प्रारंभिक च् वर्ग (च्,छ्,ज्,झ्, ञ्) तथा ट वर्ग की इत् स़ंज्ञा करता है।
4. **सूत्र** – लशक्वतद्धितार्थे
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में तद्धित भिन्न प्रत्यय के प्रारंभिक ल,श,व, क वर्ग की इत् संज्ञा करता है।
   नोट – इत्संज्ञक वार्तिक – इर इत्संज्ञा वक्तव्या। धातु के अंत में विद्यमान इर् की इत्संज्ञा होती है जैसे – च्युतिर व धुतिर में इर्' की इत् संज्ञा होती है।
5. **सूत्र** – षः प्रत्ययस्य
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में प्रारंभिक 'ष' की इत्संज्ञा करता है। जैसे – षाकन्
6. **सूत्र** – आदिर्ञिटुडवः
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में धातु के आदि में स्थित ञि, टु, डु की इत् संज्ञा करता है।
   जैसे – डुधाञ्

अनुबंध – इत्संज्ञकत्वमनुबन्धत्वम

प्रत्यय व धातु के आदि व अंत में लगे स्वर एवं व्यंजन नो सहेतुक / इत्संज्ञक है वे अनुबंध इत्संज्ञक होते है।

लोप संज्ञा विधायक सूत्र – विद्यमान का लोपसंज्ञक

सूत्र – अदर्शनं लोपः

व्याख्या – शास्त्रीय विधान से प्राप्त ध्वनि का कर्णेन्द्रिय के द्वारा 'अदर्शन' या सुनाई न देना ही लोप कहा जाता हैं

जैसे – पचित इस पद में धातु पाठ में पढे गये, डु, अ और ष् की ध्वनि सुनाई नहीं देती है। शास्त्रीय विधान के अनुसार पच् धातु को धातु पाठ में डुपचष् पाके' इस प्रकार पढ़ा गया है।

सूत्र – तस्य लोपः

व्याख्या – यह सूत्र हलन्त्यम्' चुटू' आदि सूत्रों के द्वारा जिनकी इत्संज्ञा की जा चुकी है उनका लोप करता है। इत्संज्ञा का फल लोप होता है।

अइउण् आदि माहेश्वर सूत्रों के अंतिम वर्ण इत्संज्ञक तो हैं किंतु लोप नहीं होता अपितु इन से प्रत्याहार बनाये जाते हैं।

प्रत्याहारों की सिद्धि के निमित ही इनकी इत्संज्ञा की गयी है।

नोट – संज्ञा प्रकरण में तस्य लोपः ही एकमात्र विधि सूत्र है इसके अतिरिक्त सभी संज्ञा सूत्र हैं।

प्रत्याहार संज्ञा सूत्रम्

वृत्ति – अन्त्येनेता सहित आदिमध्यगानां स्वस्य च संज्ञा स्यात्

सूत्र – आदिरन्त्येन सहेता – इतिसंज्ञायाम्

व्याख्या – आदि और अंत से युक्त, मध्य स्थित वर्णों की तथा साथ ही अपनी संज्ञा का भी बोध कराना सहेता कहलाता है। और इन्हे ही प्रत्याहार कहा जाता है।

जैसे – अण् प्रत्याहार – यह प्रत्याहार अ,इ,उ इन वर्णों की संज्ञा का ज्ञान कराता है। ण् इत् संज्ञक होने से लोप हो जाता है तथा मध्य स्थित इ एवं उ वर्णों सहित स्वयं का भी बोधक है।

प्रत्याहार का अर्थ – संक्षिप्यन्ते वर्ण अन्नेति प्रत्याहारः

व्याख्या – जो वर्णों की संक्षिप्तता करता है प्रत्याहार कहलाता है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

क्र.सं.	प्रत्याहार	वर्ण
1.	अण्	अ इ उ।
2.	अक्	अ इ उ ऋ लृ।
3.	अच्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ। सभी स्वर (अचः स्वराः)
4.	अट्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र्।
5.	अण्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र् ल् ।
6.	अम्	सभी स्वर, य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न्।'
7.	अश्	सभी स्वर, ह् य् व् र् ल् वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण।
8.	अल्	सभी वर्ण।
9.	इक्	इ उ ऋ लृ।
10.	इच्	इ उ ऋ लृ ए ओ ऐऔ
11.	इण्	इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य् व् र् लृ
12.	उक्	उ ऋ लृ।
13.	एङ्	ए ओ।
14.	एच्	ए ओ ऐ औ।
15.	ऐच्	ऐ औ।
16.	खय्	वर्गों के 1, 2 वर्ण
17.	खर्	वर्गों के 1, 2 वर्ण श्, ष, स्।
18.	ङम्	ङ् ण् न्।
19.	चय्	च्, ट्, त्, क् प्।
20.	चर्	च्, ट्, त्, क् प् श्, ष, स्।
21.	छव्	छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्।
22.	जश्	ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
23.	झय्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण।
24.	झर्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण श्, ष, स्।
25.	झल्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण श्, ष्, स्, ह।
26.	झश्	वर्गों के, 3, 4 वर्ण।
27.	झष्	झ्, भ्, घ्, ढ्, ध् (वर्गों के चतुर्थ वर्ण)
28.	बश्	ब्, ग्, ड्, द्।
29.	भष्	भ् घ् ढ् ध् (झ् को छोड़कर वर्गों के चतुर्थ वर्ण।)
30.	मय्	ञ् को छोड़कर वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण।
31.	यञ्	य्, व्, र्, ल् वर्गों के 5 वें वर्ण, झ्, भ्।
32.	यण्	य्, व्, र्, ल्। (अन्तःस्थ वर्ण)
33.	यम्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्,।
34.	यय्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण।
35.	यर्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण, श्, ष्, स्।
36.	रल्	य्, व् के अलावा सभी व्यंजन।
37.	वल्	य् के अलावा सभी व्यंजन।
38.	वश्	व्, र्, ल्, वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण।
39.	शर्	श्, ष्, स्।
40.	शल्	श्, ष्, स्, ह्। (ऊष्म वर्ण)
41.	हल्	सभी व्यंजन
42.	हश्	ह्, य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 3,4,5
43.	ञम्	ञ्, म्, ङ्, ण्, न्।
44.	रँ	र्, ल्।

ध्यातव्य

1. प्रत्याहारों में वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्णों से तात्पर्य क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग एवं प वर्ग के प्रथम द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व **पञ्चम** वर्ण से है।
2. अष्टाध्यायी में प्रत्याहारों की संख्या 41 या (रँ प्रत्याहार को जोडकर 42) मानी गई हैं। इनके अलावा वार्तिकों में 'चय' तथा उणादि सूत्रों में 'ञम्' प्रत्याहार को मानकर प्रत्याहारों की कुल संख्या 44 मानी गई हैं।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी में प्रत्याहारों की संख्या 42 मानी गई है।
4. इन प्रत्याहारों में 'अण्' प्रत्याहार का दो बार पाठ किया गया है।

अचों का अष्टादशभेद विवरण चक्र

ह्रस्व भेद	दीर्घ भेद	प्लुत भेद
अ, इ, उ, ऋ, लृ	**अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ**	**अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ**
ह्रस्व उदात्त अनुनासिक	दीर्घ उदात्त अनुनासिक	प्लुत उदात्त अनुनासिक
ह्रस्व उदात्त अनुनासिक	दीर्घ उदात्त अनुनासिक	प्लुत उदात्त अनुनासिक
ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक	दीर्घ अनुदात्त अनुनासिक	प्लुत अनुदात्त अनुनासिक
ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक	दीर्घ अनुदात्त अनुनासिक	प्लुत अनुदात्त अनुनासिक
ह्रस्व स्वरित्त अनुनासिक	दीर्घ स्वरित्त अनुनासिक	प्लुत स्वरित्त अनुनासिक
ह्रस्व स्वरित्त अनुनासिक	दीर्घ स्वरित्त अनुनासिक	प्लुत स्वरित्त अनुनासिक

सवर्णसंज्ञा सूत्र

सूत्र – तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्

व्याख्या – तालु आदि स्थान एवं आभ्यन्तरं प्रयत्न ये दोनों जिन वर्णों के परस्पर समान हो, उन दोनों वर्णों की सवर्ण संज्ञा होती है।

जैसे – अ, आ/इ, ई, उ, ऊ

कु, चु, टु, तु, पु को उदित् कहा गया है।

नोट – अ और इ का आभ्यन्तर प्रयत्न समान है परंतु उच्चारण स्थान भिन्न– भिन्न क्रमश' कंठ एवं तालु है अत' सवर्ण नहीं है। इसी प्रकार अकार व ककार का उच्चारण स्थान कण है परंतु आभ्यतन्तर प्रयत्न क्रमशः विवृत्त एवं स्पष्ट होने से भिन्न–भिन्न हैं तथा सवर्ण नहीं कहे जा सकते है।

वर्णानामुच्चारणस्थानानि

व्याख्या – प्रत्येक वर्ण वाग्यंत्र के किसी अवयव से उच्चारित होता है। वर्णों के उच्चारित होने के भिन्न–भिन्न स्थानों की दृष्टि से मुख्यतः आठ उच्चारण स्थल हैं जो निम्नानुसार है–

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तया।
जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।।

उच्चारण स्थानों के आधार पर वर्णों का विभाजन

1.	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	–	अ, आ, क वर्ण, ह् (:) विसर्ग	–	कण्ठ
2.	इचुयशानां तालु	–	इ, ई, च वर्ग, य्, श्	–	तालु
3.	ऋटुरषाणां मूर्धा	–	ऋ, ॠ, ट वर्ग, र्, ष्	–	मूर्धा
4.	लृतुलसानां दन्ताः	–	लृ, त वर्ग, ल्, स्	–	दन्त
5.	उपूपध्मानीयानामोष्ठौ	–	उ, ऊ, प वर्ग, ᳵप ᳵफ	–	ओष्ठ
6.	ञमङणनानां नासिका च	–	ङ., ञ्, ण्, न्, म्	–	नासिका
7.	एदैतोः कण्ठतालु	–	ए, ऐ	–	कण्ठतालु
8.	ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	–	ओ, औ	–	कण्ठोष्ठ
9.	वकारस्य दन्तोष्ठम्	–	व्	–	दन्तोष्ठ
10.	जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	–	ᳵक, ᳵख	–	जिह्वामूल
11.	नासिकाऽनुस्वारस्य	–	(–̇)	–	नासिका

स्वरों के वैदिक भेद 3 है–

1. **उदात्त स्वर ("उच्चैरूदात्तः") –** ऊपर भाग से बोले जाने वाले अच् स्वर उदात्त कहलाते है। इसका कोई चिह्न नहीं होता है। जैसे – अ, इ, उ।
2. **अनुदात्त स्वर ("नीचैरनुदात्तः")** – निम्न से उच्चरित स्वर अनुदात्त कहलाते हैं। अनुदात्त की नीचे पड़ी रेखा का प्रयोग होता है। जैसे – अ, इ, उ।
3. **स्वरित स्वर ("समाहारः स्वरितः") –** उदात्त व अनुदात्त का समाहार या मिश्रण स्वरित स्वर कहलाता है। स्वरित के ऊपर खड़ी रेखा का प्रयोग होता है। जैसे– अ, इ, ऊ।

2 CHAPTER प्रत्ययप्रकरणम्

प्रत्यय – प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः
प्रत्ययों के मुख्यतः तीन भेद होते हैं –
1. कृत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय
3. स्त्री प्रत्यय

कृत प्रत्यय

- कृत प्रत्ययों में से 7 प्रत्यय 'कृत्य प्रत्यय' कहलाते हैं–

1. तव्यत्
2. तव्य
3. अनीयर्
4. केलिमर्
5. यत्
6. क्यप्
7. ण्यत्

- अव्यय बनाने के लिए धातुओं में – क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्।
- धातु से विशेषण बनाने के लिए – शतृ, शानच, तव्यत्, अनीयर्, यत्।
- भूतकालिक क्रिया के प्रयोग के लिए – क्त, क्तवतु, (तव्यत्, अनीयर, यत् करना चाहिए – क्रिया के वाचक)
- धातु से संज्ञा बनाने हेतु – तृच्, क्तिन, ण्वुल्, ल्युट्, आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता हैं।
- तव्यत् प्रत्यय में से त् का लोप होने पर 'तव्य' शेष रहता है।
- अनीयर् प्रत्यय का 'अनीय' शेष रहता है।
  इन प्रत्ययों का प्रयोग 'कर्मवाच्य' या 'भाववाच्य' में ही किया जाता है।

1. तव्यत् प्रत्यय

यथा –

पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्
पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्

2. अनीयर् प्रत्यय

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कृ + अनीयर	करणीयः	करणीया	करणीयम
क्री + अनीयर्	क्रयणीयः	क्रयणीया	क्रयणीयम्

3. तुमुन् प्रत्यय – इस प्रत्यय में अन्तिमं अक्षर न् का लोप हो जाने पर 'तुम्' शेष रहता है। तुमुन् प्रत्यय से बना अव्यय होता है।

यथा –

गम् + तुमुन्	–	गन्तुम्
दृश + तुमुन	–	द्रष्टुम्
मुच + तुमुन	–	मोक्तुम्
जि + तुमुन	–	जेतुम्

4. ण्वुल् प्रत्यय – कर्ता अर्थ में धातु से ण्तुल् प्रत्यय का योग किया जाता है 'ण्वुल्' में 'वु' शेष रहता है, वु के स्थान पर 'अक' हो जाता है।

यथा – कृ + ण्वुल् –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कारकः	कारिका	कारकम्

गम् – गमकः
पच् – पाचकः
प्र + आप् – प्रापकः

5. तृच प्रत्यय – तृच का 'तृ' शेष रहता है और 'च्' का लोप हो जाता है।

यथा –

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
कर्ता	कर्त्री	कर्तृ
क्री –क्रेतृ	क्रेता	
दा –दातृ	दाता	
पठ –ठितृ	पठिता	

6. यत् प्रत्यय – यत् में 'य' शेष रहता है व धातु में गुण हो जाता है।

यथा –
नी – नेयम्
चि – चेयम्
क्री – क्रेयम्
श्रु – श्रव्यम
श्रि – श्रेयम्?

नोट – ऋकारान्त धातुओं से 'यत्' नहीं लगता हैं।

- आकारान्त धातु के आ के स्थान पर ईत् (ई) हो जाता है, यत् प्रत्यय परे रहते तथा ई का ए गुण हो जाता है।

यथा –
दा – देयम्
घ्रा – घ्रेयम्

पा – पेयम्
धा – धेयम्
स्था – स्थेयम्

प वर्गान्तर धातुएँ जिनकी उपधा में ह्रस्व अकार हो, से भाव और कर्म में यत् प्रत्यय होता है।

यथा – शप् – शप्यम्
वप् – वप्यम्
नम् – नम्यम्

7. ण्यत् प्रत्यय – ण्यत् में 'य' शेष रहता है। ण्यत् से पूर्व ऋ की वृद्धि हो जाती है। योग्य अर्थ बताने के लिए 'ण्यत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा –	कार्यः	कार्या	कार्यम्
	मृज्	मार्ग्यः	
	स्मृ	स्मार्यम्	
	ग्रह	ग्राह्यम्	

8. क्यप् प्रत्यय

- इण (इ), स्तु, शास, वृ, दृ और जुष् धातु से भाव और कर्म में 'क्यप्' प्रत्यय होता है।
- 'चाहिए' व 'योग्य' अर्थ में क्यप् प्रत्यय होता है तथा क्यप् में य शेष रहता है।
- धातु को तुक् का आगम होता है क्यप् प्रत्यय रहते है। तुक् का 'त्' शेष रहता है।

यथा – इण – इत्यः आदृ – आदृव्यः
वृ – वृत्यः जुष् – जुष्यः
वृष् – वृष्यम् दृश् – दृश्यः
शास् –शिष्यः रुच् – रुच्यम्
स्तु – स्तुत्यः

9. शतृ एवं शानच प्रत्यय – परस्मैदी धातुओं में शतृ का प्रयोग किया जाता है। शतृ के श् और ऋ का लोप होकर धातु में 'अत्' जुड़ता है।

- आत्मनेपदी धातुओं में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। शानच् के श् और च् का लोप होकर धातु के साथ आन जुड़ता है तथा म् आगम् होकर कही–कहीं 'मान' जुड़ता है।

यथा –

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
पठ् + शतृ (अत्)	पठन	पठन्ती	पठत्
सेव् + शानच् (मान्)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम
वृत् + शानच् (मान्)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
हस् + शतृ (अत्)	हसन्	हसन्ती	हसत्

- परस्मैपदी धातु में –

कृ – कुर्वन
गम् – गच्छन्
भ्रम – भ्रमन्
दृश् (पश्च) – पश्यन्
इष् (इच्छ) – इच्छन्
पा (पिब्) – पिबन्

- आत्मनेपदी धातु में –

कृ – कुर्वाणः
लभ् – लभमानः
वृध – वर्धमानः
दा – ददानः
यज् – यजमानः

10. क्त एवं क्तवतु प्रत्यय

- किसी कार्य की समाप्ति का ज्ञान कराने के लिए अर्थात् भूतकाल के अर्थ में क्त और क्तवतु प्रत्यय का होते हैं।
- क्त प्रत्यय धातु से भाववाच्य या कर्मवाच्य में होता है और इसका 'त' शेष रहता है।
- क्तवतु प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है और इसका 'तवत्' शेष रहता है।
- क्त और क्तवतु के रूप तीनों लिंगों में चलते है।

यथा –

गम् + क्तवतु – गतवान् गतवती गतवत्
गम् + क्त – गतः गता गतम्

धातु	**क्त**	**क्तवतु**
अर्च्	अर्चितः	अर्चितवान्
विकृ	विकृतः	विकृतवान्
स्मृ	स्मृतः	स्मृतवान्
व्यज्	व्यक्तः	व्यक्तवान्
स्था	स्थितः	स्थितवान्

- **क्त प्रत्ययान्त रूप**

परि त्यज् – परित्यक्तः
हन् – हतः
पच् – पक्वः
भिद् – भिन्नः
गम् – गतः
नी – नीतः

- **क्तवतु प्रत्ययान्त रूप**

परित्यज् – परित्यक्तवान्
पठ् – पठितवान्
दश् – दृष्टवान्
आनी – आनीतवान्
पा – पीतवान्
पृछ – पृष्टवान्
भुज् – भुक्तवान्

11. क्त्वा प्रत्यय

- क्त्वा प्रत्यय में से क् का लोप होकर केवल त्वा शेष रहता है।
- सेट धातुओं में 'इ' जुड़ता है। इ केवल वही जुड़ता है जहाँ क्रिया में इ के जोड़ें जाने की आवश्यकता होती है।
- क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय वाले शब्द अव्यय हो जाते है। अतः इनका एक ही रूप होता है।

यथा – धृ – धृत्वा
नम् – नत्वा
पी – पीत्वा
गम् – गत्वा
भू – भूत्वा
पठ् – पठित्वा
लिख् – लिखित्वा
गा – गीत्वा
चल् – चलित्वा
श्रु – श्रुत्वा

12. ल्यूट् प्रत्यय

- भाववाचक संज्ञा बनाने में ल्यूट् प्रत्यय होता है नपुंसकलिग में।
- ल्यूट का 'यु' शेष रहता है। यु के स्थान पर 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'अन' आदेश होता है।

यथा – धृ – धरणम्
कृ – करणम्
चि – चयनम्
पठ् – पठनम्
ग्रह – ग्रहणम्
भृ – भरणम्
लिख् – लेखनम्

13. घञ् प्रत्यय

- घञ् प्रत्यय का 'अ' शेष रहता है और इसके रूप पुल्लिंग में ही होते है।
- धातु को गुण या वृद्धि होती है।
- ण्यत्, घञ् प्रत्यय होने की स्थिति में धातु के च् को 'क्' तथा ज् के स्थान पर 'ग्' हो जाता है।

यथा – त्यज् – त्यागः
रम् – रामः
प्र + वह् – प्रवाहः
युज् – योगः

14. क्तिन् प्रत्यय – क्तिन् का 'ति' शेष रहता है तथा धातु के गुण, वृद्धि न होकर सम्प्रसारण होता है। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग में होते हैं। इनके रूप मति के समान चलते है।

यथा – मन् – मतिः
गा – गीतिः
सम् + कृ – संस्कृति
धृ – धृतिः
वच् – उक्तिः
भी – भीतिः
जन् – जातिः

तद्धित प्रत्यय – जिन प्रत्ययों का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, आदि शब्दों के बाद किया जाता है। वे 'तद्धित प्रत्यय' कहलाते है।

यथा – उपगु + अण् – औपगवः

किसी वस्तु का समूह अर्थ बताने के लिए उस वस्तु में अण् प्रत्यय होता हैं।

यथा – मर्कट + अण् – मार्कटम्

मनुष्यम् + अण् – मानुष्यम्

(1) मतुप प्रत्यय

- 'वाला' अर्थ में शब्दों से मतुप् प्रत्यय होता है।
- मतुप् में 'उप्' का लोप होकर शब्दों से केवल 'मत्' जुड़ता है।
- अकारान्त और आकारान्त शब्दों में मतुप् प्रत्यय जोड़ने पर 'म' के स्थान पर 'व' हो जाता है। (मत् = वत्)

यथा – रस – रसवान्
बल – बलवान्
धी – धीमान्
गो – गोमान्

(2) त्व, तल् प्रत्यय – भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्दों से 'त्व' और 'तल्' (ता) प्रत्ययों का योग किया जाता है। त्व प्रत्यान्त शब्द नित्य नपुंसकलिंग (त्वम्) और तल् प्रत्ययान्त शब्द नित्य स्त्रीलिC (तल् = ता) में होते हैं।

यथा –

शब्द	त्व प्रत्ययान्त	प्रत्ययान्त
मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
विद्वस्	विद्वत्वम्	विद्वता

(3) मयट् प्रत्यय – 'विकार' और 'अवयव' के अर्थ में 'मयूट्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। मयट् में से टकार का लोप हो जाने पर 'मय' शेष रहता है।

यथा – भस्म + मयट् – भस्ममयम्
सुवर्ण + मयट् – सुवर्णमयम्

(4) तमप् प्रत्यय – बहुतों में से एक को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बताने के लिए शब्द के साथ तमप् प्रत्यय जोड़ा जाता है। तमप् में 'तम' शेष रहता है।

यथा – चतुर + तमप् चतुरतमः चतुरतमा चतुरतमम्

गुरु + तमप् ?

गुरुतमः गुरुतमा गुरुतमम्

मधु + तमप्

मधुरतमः मधुरता मधुरतमम्

(5) तरप् प्रत्यय – दो वस्तुओं में से एक को श्रेष्ठ या निकृष्ठ बताने के लिए शब्द में 'तरप्' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

- तरप् में 'तर' शेष रहता है।

यथा – चतुर + तरप् –

चतुरतरः चतुरतरा चतुरतरम्

मृदु + तरप्

मृदुतरः मृदुतरा मृदुतरम्

(6) इनि प्रत्यय – अकारान्त शब्दों में 'वाला' या 'युक्त' अर्थ में 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय का होते हैं।

- इनि का 'इन्' और 'ठन्' का 'ठ' शेष रहता है।

यथा – दण्ड + इनि – दण्डिन् दण्डी

बल + इनि – बलिन् बली

स्त्री प्रत्यय – पुल्लिंग शब्दों में जिन प्रत्ययों को लगाकर स्त्रीलिंग या स्त्रीवाचक शब्द बनाये जाते है, उन्हें स्त्री प्रत्यय कहते हैं।

ये 8 प्रकार के होते है –

1. आ (टाप् , डाप् , चाप् ,)
2. ई (ङीप्, ङीष्, ङीन्)
3. ऊङ
4. ति

(1) **टाप् प्रत्यय –** टाप् का 'आ' शेष रहता है –

यथा – अश्व + टाप् – अश्वा

ज्येष्ठ + टाप् – ज्येष्ठा

खट्व + टाप् – खट्वा

नोट – यदि पुल्लिंग शब्द के अन्त में 'अक्' हो तो आ (टाप्) प्रत्यय लगने पर 'इक' हो जाता है।

यथा – मूषक + टाप् – मूषिका

नायक + टाप् – नाकिा

(2) **ङीप् प्रत्यय –** शतृ, मतुप, क्त्वतु प्रत्ययान्त युक्त शब्दों में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। ङीप् का 'ई' शेष रहता है।

यथा – भवत् + ङीप् – भवती (भवन्ती)

श्रीमत् + ङीप् – श्रीमती

कामिन् + ङीप् – कामिनी (शब्दों से स्त्रीलिंग में (ङीप्) प्रत्यय होता है।

नोट – अनुपसर्जन जो टित् आदि तदन्त जो अदन्त प्रतिपादिक उससे स्त्रीलिंग में ङीप् होता है।

देवट् + ङीप् – देवी

नदत् + ङीप् – नदी

वैनतेय + ङीप् – वैनतेयी

नोट – प्रथम अवस्थावाची अकारान्त पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग में 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

यथा – कुमार + ङीप् – कुमारी

चिरण्ट + ङीप् – चिरण्टी

नोट – अदन्त द्विगु समास के शब्दों में ङीप् प्रत्यय होता है।

यथा – त्रिलोक + ङीप् – त्रिलोकी

शताब्द + ङीप् – शताब्दी

(3) **ङीष् प्रत्यय –** जिसका षकार इत्संज्ञक हो ऐसे प्रतिपादकों से तथा गौर आदि शब्दों से पठित प्रतिपादकों से स्त्रीत्व की विवक्षा में ङीष् प्रत्यय होता है। ङीष् का ई शेष रहता है।

यथा – नर्तक + ङीष् – नर्तकी

गौर + ङीष् – गौरी

साधु + ङीष् – साध्वी

तनु + ङीष् – तन्वी

(4) **ति प्रत्यय –** युवन् शब्द से स्त्रीलिंग में 'ति' प्रत्यय होता है।

यथा – युवन + ति – युवतिः

प्रत्यय के अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण

धातु	**तव्यत्**	**अनीयर्**
गम्	गन्तव्यः	गमनीयः
मन्	मन्तव्यः	मननीयः
ज्ञा	ज्ञातव्यः	ज्ञानीयः
दृश्	द्रष्टव्यः	दर्शनीयः
मुञ्चु	मोक्तव्यः	मोचनीयः
रक्ष्	रक्षितव्यः	रक्षणीयः
प्रच्छ्	प्रष्टव्यः	प्रच्छनीयः
अस्	भवितव्यः	भवनीयः
लभ्	लब्धव्यः	लभनीयः
भिद्	भेत्तव्यः	भेदनीयः

तुमुन प्रत्यय

पठ्	–	पठितुम्
कृ	–	कर्त्तुम्
मुद्	–	मोदितुम्
अस्	–	भवितुम्
गृह	–	गृहीतुम्
क्रुध	–	क्रोद्धुम्
ज्ञा	–	ज्ञातुम्
दा	–	दातुम्
ब्रू	–	वक्तुम्
पा	–	पातुम्
लभ्	–	लब्धुम्

Toppersnotes Unleash the topper in you

ण्वुल् प्रत्यय

हन्	–	घातकः
वद्	–	वादकः
छिद्	–	छेदकः
कृ	–	कारकः
धा	–	धायकः
भिद्	–	भेदकः
दह्	–	दाहकः
गम्	–	गमकः
जन्	–	जनकः
नी	–	नायकः
दृश्	–	दर्शकः

तृच् प्रत्यय

वह्	–	वोढा
पठ्	–	पठिता
सृज	–	स्त्रष्टा
भुज्	–	भोक्ता
हन्	–	हन्ता
श्रु	–	श्रोता
क्री	–	क्रेता
पच्	–	पक्ता
हृ	–	हर्ता
भिद्	–	भेत्ता
प्रच्छ्	–	प्रष्टा
गम्	–	गन्ता

यत् प्रत्यय

शप्	–	शप्यम्
पा	–	पेयम्
ध्यै	–	ध्येयम्
लभ्	–	लभ्यम्
गै	–	गेयम्
भू	–	भव्यम्
क्री	–	क्रेयम्
ज्ञा	–	ज्ञेयम्
धा	–	धेयम्
हन्	–	वध्यः
सह्	–	सह्यम्
श्रु	–	श्रव्यम्
जि	–	जेयम्

ण्यत् प्रत्यय

मृज्	–	मार्ग्यः
कुप्	–	कोप्यम्
हृ	–	हार्यम्
दुह्	–	दोह्यः
पच्	–	पाक्यः
याच्	–	याच्यम्
ऋ	–	आर्यः
वद्	–	वाद्यम्
वच्	–	वाक्यम् / वाच्यम्
यज्	–	याज्यम्

शतृ प्रत्यय

क्रीड्	–	क्रीडन्
वद्	–	वदन्
पत्	–	पतन्
पा	–	पिबन्
गम्	–	गच्छन्
श्रु	–	श्रृण्वन्
त्यज्	–	त्यजन्
वस्	–	वसन्
स्था	–	तिष्ठन्
हन्	–	हनन्
कुप्	–	कुप्यन्
कृ	–	कुर्वन्

शानच् प्रत्यय

कम्प्	–	कम्पमानः
मुद्	–	मोदमानः
जन्	–	जायमान्
कृ	–	कुर्वाणः
ज्ञा	–	जानानः
शी	–	शयान्
ब्रू	–	ब्रुवाणः
भुज्	–	भुळजनः
नी	–	नयमानः
क्री	–	क्रीणान्

क्त्वा प्रत्यय

क्रुध्	–	क्रुद्ध्वा
हन्	–	हत्वा
अस्	–	भूत्वा
वद्	–	उदित्वा
धा	–	हसित्वा
क्री	–	क्रीत्वा
दा	–	दत्वा
गम्	–	गत्वा
क्षिप्	–	क्षित्वा

क्त प्रत्यय, क्तवतु प्रत्यय

मन्	मतः	मतवान्
जि	जितः	जितवान्
हृ	हृतः	हृतवान्
शिक्ष्	शिक्षितः	शिक्षितवान्
क्रीड्	क्रीडितः	क्रीडितवान्

दृश	दृष्टः	दृष्टवान्
लभ्	लब्धः	लब्धवान्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्
दह्	दग्धः	दग्धवान्
अद्	जग्धः	जग्धवान्
रच्	रचितः	रचितवान्
हा	हीनः	हीनवान्
सह्	सोढः	सोढवान्
चुर्	चोरितः	चोरितवान्
प्राप्	प्राप्तः	प्राप्तवान्
छिद्	छिन्नः	छिन्नवान्
धा	हितः	हितवान्
हस्	हसितः	हसितवान्
रम्	रतः	रतवान्
हन्	हतः	हतवान्

ल्यूट् प्रत्यय

भृ	–	भरणम्
विद्	–	वेदनम्
सह्	–	सहनम्
मुद्	–	मोदनम्
रक्ष्	–	रक्षणम्
गम्	–	गमनम्
लिख्	–	लेखनम्
हस्	–	हसनम्
दुह्	–	दोहनम्
त्यज्	–	त्यजनम्
रूद्	–	रोदनम्
ज्वल्	–	ज्वलनम्
स्था	–	स्थानम्

घञ् प्रत्यय

कुप्	–	कोपः
बुध	–	बोधः
मुह्	–	मोहः
तृ	–	तारः
नि	–	न्यायः
शम्	–	शमः
युज्	–	योगः
मृज्	–	मार्गः
धृ	–	धारः
वद्	–	वादः
हृ	–	हारः
हस्	–	हासः
पच्	–	पाकः

क्तिन् प्रत्यय

वृध्	–	वृद्धिः
स्तु	–	स्तुतिः
भी	–	भीतिः
रम्	–	रतिः
कृ	–	कृतिः
भ्रम्	–	भ्रान्तिः
बुध्	–	बुद्धिः
गम्	–	गतिः
यम्	–	यतिः
रूह्	–	रूढिः

मतुप प्रत्यय

ऊर्मि	–	ऊर्मिमान्
श्री	–	श्रीमान्
धी	–	धीमान्
पुत्र	–	पुत्रवान्
रस्	–	रसवान्
ज्ञान्	–	ज्ञानवान्
बुद्धि	–	बुद्धिमान्
भूमि	–	भूमिमान्
गो	–	गोमान्
स्पर्श	–	स्पर्शवान्

त्व, तल् प्रत्यय

प्रभुः	प्रभुत्वम्	प्रभुता
सम	समत्वम्	समता
जन	जनत्वम्	जनता
दीर्घ	दीर्घत्वम्	दीर्घता
पटु	पटुत्वम्	पटुता
पशु	पशुत्वम्	पशुता
मृदु	मृदुत्वम्	मृदुता
पवित्र	पवित्रत्वम्	पवित्रता
देव	देवत्वम्	देवता
मग	ममत्वम्	ममता

तमप् प्रत्यय, तरप् प्रत्यय

कृश	कृशतमः	कृशतरः
बहु	बहुतमः	बहुतरः
क्षुद्र	क्षुद्रतमः	क्षुद्रतरः
दूर	दूरतमः	दूरतरः
प्रिय	प्रियतमः	प्रियतरः
पशु	पशुतमः	पशुतरः
मृदु	मृदुतमः	मृदुतरः
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतमः	श्रेष्ठतरः
पटु	पटुतमः	पटुतरः

इनि प्रत्यय

ज्ञान – ज्ञानिन्

पाप – पापिन्

दण्ड – दण्डिन्

योग – योगिन्

धन् – धनिन्

मन्त – मन्तिन्

टाप् प्रत्यय

अज् – अजा

बाल – बाला

सर्व – सर्वा

कनिष्ठ– कनिष्ठा

धावक – धाविका

पाठक – पाठिका

मेध – मेधा

वृद्ध – वृद्धा

अश्व – अश्वा

खट्व – खट्वा

सरल – सरला

चटक – चटका

बालक – बालिका

ङीष् प्रत्यय

कर्तृ – कर्त्री

भवत् – भवती

इन्द्र – एन्द्री

कीदृश – कीदृशी

अक्ष – अक्षिकी

भरत – भारती

श्रीमत् – श्रीमती

नदट् – नदी

सुपर्णा – सौपर्णेयी

तादृश – तादृशी

नेतृ – नेत्री

ङीष् प्रत्यय

गुरु – गर्वी

हिम – हिमानी

रुद्र – रुद्राणी

इन्द्र – इन्द्राणी

ब्राह्मण – ब्राह्मणी

गौर – गौरी

मृदु – मृद्वी

तनु – तन्वी

पृथु – पृथ्वी

दाक्षि – दाक्षी

कुन्ति – कुन्ती

लधु – लध्वी

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER

संधिः

(व्युत्पत्ति :– वि + आङ्. + कृ + ल्युट्)

व्युत्पत्ति – सम उपसर्ग + डुधाञ् (धा) धातु + कि प्रत्यय (सम् + धा + कि)

भेदाः – स्वर सन्धिः (अच् सन्धिः)

1. **दीर्घ :** – संधि (अकः सवर्णे दीर्घः) लृकार का दीर्घ नहीं होता हैं।
   (i) अ/आ + अ/आ = आ
   (ii) इ/ई + इ/ई = ई
   (iii) उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ
   (iv) ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ
   (v) लृ + लृ = लृ

यथा –परि + ईक्षा = परीक्षा

हरि + ईशः= हरीशः

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

मातृ + ऋणम् = मातृणम्

पितृ + ऋद्धिः = पितृद्धि

लृ + लृकारः = लृकारः

2. **गुण सन्धि** – (''अदेङ्गुणः'')
   - अर्थ – **अ** या **आ** के बाद **इ** या **ई** आये तो दोनों के स्थान पर ए हो जाता हैं।
     अ या आ के बाद उ अथवा ऊ है तो दोनों के स्थान पर ओ हो जाता है।
   - अ अथवा आ + ऋ/ॠ आये तो अर् हो जाता हैं।
   - अ अथवा आ के बाद लृ आये तो अल् हो जाता हैं।

यथा – सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः

सूर्य + उदयः = सुर्योदयः

महा + ऋषिः = महर्षिः

तव + लृकारः = तवल्कारः

3. **वृद्धि सन्धि** – (''वृद्धिरादैच्'')

इसी प्रकार – अ/आ + ए = ऐ

अ/आ + ओ = औ

अ/आ + ऐ = ऐ

अ/आ + औ = औ

यथा – एव + एषः = एवैषः

वन + औषधिः = वनौषधिः

च + एव = चैव

स्थूल + ओतुः = स्थुलौतुः

विशेष उदाहरण – प्र + एधते = प्रैधते

प्र + ऊढिः = प्रौढ़िः

वसन + ऋणम् = वसनार्णम्

4. **यण् सन्धि** – (''इकोयणचि'')

जैसे – इ/ई + असमान स्वर = य्

उ/ऊ + असमान स्वर = व्

ऋ/ॠ + असमान स्वर = र्

लृ + असमान स्वर = ल्

यथा – नास्ति + एव = नास्त्येव

सति + अपि = सत्यपि

सु + अस्ति = स्वस्ति

लृ + अनुबन्धः = लनुबन्धः

5. **अयादि सन्धि** –
   (i) (''एचोऽयवायावः'')
   जैसे – ए + अच् (स्वर) = अय्
   ओ + अच् (स्वर) = अव्
   ऐ + अच् (स्वर) = आय्
   औ + अच् (स्वर) = आव्

यथा –

हरे + ए = हरये

नै + अकः = नायकः

ने + अनम् = नयनम्

जे + अः = जयः

पो + अनम् = पवनम्

धर्मार्थो + उच्यते = धर्मार्थावुच्यते

(ii) ''वान्तो यि प्रत्यये''

यथा – गो + यम् (ग् + अव् + यम्) = गव्यम्

नौ + यम् (न् + आव् + यम्) = नाव्यम्

6. पररूप संधि

(i) (''एङि पररूपम्'')

अर्थ – अकारान्त उपसर्ग से परे धातु के पहले एड़ (ए, ओ) वर्ण होता हैं तो उन पूर्व और पर् दोनों वर्णों के स्थान पर पररूप एकादेश होता हैं। पररूप सन्धि वृद्धि सन्धि का अपवाद हैं।

यथा – प्र + एजते = प्रेजते

उप + ओषति = उपोषति

(ii) ''शकन्धादिषु पररूप वाच्यम्'' (वार्तिक)

''अचोऽन्त्यादि टि''

यथा – मनस् + ईषा = मनीषा

कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः

7. पूर्वरूप सन्धि – (''एङः पदान्तादित'')

यथा – हरे + अव = हरेऽव

विष्णो + अव = विष्णोऽव

व्यंजन संधि (हल् सन्धि)

1. श्चुत्व सन्धि – (''स्तोः श्चुना श्चुः)

स् त् थ् द् ध् न्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

श् च् छ् ज् झ् ञ्

यथा – हरिस् + शेते = हरिश्शेते

कस् + चित् = कश्चित्

शार्डि.न् + जयः = शार्डि.Gजयः

राज् + नी = राज्ञी

अपवाद – श वर्ण के बाद त वर्ग होने पर श्चुत्व नहीं होता हैं।

यथा – प्रश् + नः = प्रश्नः

2. ष्टुत्व सन्धि – (''ष्टुना ष्टुः'')

स् त् थ् द् ध् न्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

यथा – रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः

उद् + डयनम् = उड्डयनम्

इष् + तः = इष्टः

सर्पिष् + तमम् = सर्पिष्टमम्

अपवाद – पदान्त ट वर्ग से परे नाम भिन्न सकार या त वर्ग को ष्टुत्व नहीं होता हैं।

यथा – षट् + सन्तः = षट्सन्तः

षट् + तरवः = षट्तरवः

3. चर्त्व सन्धि – (''खरि च'')

अर्थ –1,2,3,4 वर्ण के बाद वर्ग का 1,2, श् ष्, स् वर्ण हो तो पूर्व वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम वर्ण आदेश हो जाता हैं।

यथा – सद् + कारः = सत्कारः

लिभ् + सा = लिप्सा

विपद् + कालः = विपत्कालः

समिध् + सु = समित्सु

उद् + पन्नः = उत्पन्नः

लभ् + स्यते = लप्स्यते

4. जश्त्व सन्धि

(i) (''झलां जशोऽन्ते'')

क्, च्, ट्, त्, प्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ग् ज् ड् द् ब्

यथा – वाक् + ईशः = वागीशः

वाक् + दानम् = वाग्दानम्

सुप् + अन्तः = सुबन्तः

(ii) ''झलां जश झशि''

अर्थ – पद के बीच में झल् के स्थान पर जश् हो जाता हैं झश् परे रहते अर्थात् वर्गो के 1, 2, 3, 4 तथा श् ष् स् ह् को जश् (उसी वर्ग का तृतीया वर्ण) हो जाता हैं। यदि बाद में वर्गो का तीसरा, चौथा वर्ण हो।

यथा – बुध् + धिः = बुद्धिः

दुध् + धम् = दुग्धम्

लभ् + धः = लब्धः

5. अनुनासिक संधि

(i) (''यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा'')

क् च् ट् त् प्

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

ड. ञ् ण् न् म्

यथा – जगत् + नाथः = जगन्नाथ

वाक् + महिमा = वाड्.महिमा

(ii) ''प्रत्यये भाषयां नित्यम्''

यथा – वाक् + मयः = वाड्.मयः

अप् + मयम् = अम्मयम्

6. **अनुस्वार संधि**

(i) ("मोऽनुस्वारः")

अर्थ – यदि पद के अन्त में म् के बाद वर्ण व्यंजन होता है, तो म् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता हैं।

यथा – हरिम् + वन्दे – हरिंवन्दे

अहम् + गच्छामि – अहंगच्छामि

(ii) ("नश्चापदान्तस्य झलि")

यथा – यशान् + सि = यशांसि

हन् + सि = हंसि

(iii) ("मो राजिसमः क्वौ")

अर्थ – क्विप् प्रत्ययान्त राज् धातु के परे रहते सम् के म् का म् ही होता हैं। यह सूत्र अनुस्वार सन्धि का अपवाद हैं।

यथा – सम् + राट् = सम्राट

सम् + राजः = सम्राजः

7. **अनुस्वार परसवर्ण संधि** – ("अनुस्वारस्य यपि परसवर्णः")

अर्थ – यदि पद के मध्य अनुस्वार के बाद श् ष् स् ह् को छोड़कर कोई भी व्यंजन आए तो अनुस्वार के स्थान पर आगे वाले वर्ण का पGचम हो जाता हैं।

यथा–

शांत + तः = शान्तः

गुं + जनम् = गुGजनम्

गुं + फितः = गुम्फितः

8. **पूर्व सवर्ण संधि** – ("झयो होऽन्यतरस्याम्")

अर्थ – वर्गो के 1, 2, 3, 4 वर्ण के आगे 'हकार' के रहने पर उसको विकल्प से पूर्व सवर्ण हो जाता हैं अर्थात् पूर्व वर्ण के अनुसार उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता हैं। विकल्प में जश्त्व सन्धि होती हैं।

यथा – वाक् + हरिः – वाग्घरि : (पूर्व सवर्ण), वाग्हरिः (जश्त्व)

उद् + हारः – उद्धारः (पूर्व सवर्ण), उद्हारः (जश्त्व)

9. **लत्व सन्धि ("तोर्लि")**

अर्थ – त वर्ग के बाद ल् होने पर त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) के स्थान पर ल् हो जाता हैं।

यथा – तद् + लीनः = तल्लीनः

भगवद् + लीला = भगवल्लीला

नोट – पूर्व पद के अन्त में न् हो और सामने ल् होन पर अनुनासिक (लँ्) हो जाता हैं –

यथा – विद्वान् + लिखित – विद्वाँल्लिखित

10. **छत्व सन्धि ("शश्छोऽटि")**

अर्थ – यदि श् के पहले पदान्त में किसी वर्ग का 1, 2, 3, 4 वर्ण अथवा य् व् र् ल् ह् हो तो श् के स्थान पर छ् हो जाता हैं।

यथा –

तद् + शिवः – तच्छिवः (छत्व) तच्शिवः (श्चुत्व)

तद् + शिला – तच्छिला (छत्व) तच्शिला (श्चुत्व)

तद् + श्रुत्वा – तच्छ्रुत्वा (छत्व), तच्श्रुत्वा (श्चुत्व)

सत् + शीलः – सच्छीलः (छत्व), सच्शीलः (श्चुत्व)

उद् + श्वासः – उच्छ्वासः (छत्व), उच्श्वासः (श्चुत्व)

विसर्ग संधि

जब विसर्ग के स्थान पर कोई भी परिवर्तन होता हैं तब वह विसर्ग संधि कही जाती हैं। विसर्ग (:) का स्वर वर्ण अथवा व्यंजन वर्ण से मेल होने पर जब विसर्ग में कोई परिवर्तन होता हैं तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

यथा – नमः + ते = नमस्ते

वायुः + वाति = वायुर्वाति

विसर्ग सन्धि के भेद

1. **सत्व सन्धि** – ("विसर्जनीयस्य सः")
   - विसर्ग (:) + 1,2 वर्ण या श् ष् स् वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता हैं।

     यथा – विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता

     हरिः + त्राता = हरिस्त्राता
   - विसर्ग से परे श् च् छ् हो तो विसर्ग का 'श्' तथा यदि ष् ट् ठ् हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता हैं।
2. **उत्व सन्धि**

   (i) ("अतो रोरप्लुतादप्लुते")

   अर्थ – जब विसर्ग (:) के पहले ○स्व अ हो तथा विसर्ग (:), के बाद में भी ○स्व अ स्वर हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर ओ तथा बाद में आने वाले ○स्व अ के स्थान पर अवग्रह चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता हैं। यहाँ सन्धि विच्छेद करते समय 'स्' रखा जाना चाहिए।

   यथा – शिवस् (:) + अर्च्यः = शिवाऽर्च्यः

   सस् (:) + अपि = सोऽपि

   कस् (:) + अयम् = कोऽयम्

(ii) (**"हरि च"**) – यदि विसर्ग के पहले ○स्व अ हो और विसर्ग (:) के आगे किसी भी वर्ग का तीसरा चौथा, पाँचवा अथवा य् व् र् ल् ह् – इन बीस वर्णों में से कोई भी एक वर्ण हो तो विसर्ग (:) के पहले वाले अ तथा विसर्ग (:) दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता हैं।

यथा – नमस् (:) + नमः = नमो नमः

मनस् (:) + रथः = मनोरथः

3. **रुत्व संधि – ("ससजुषो रूः")**

अर्थ – यदि विसर्ग के पूर्व अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और उस विसर्ग (:) के बाद कोई स्वर वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण य् व् र् ल् ह् वर्ण हो तो विसर्ग का र् हो जाता हैं।

यथा – दयालुः + अपि = दयालुरपि

ज्योतिः + गमयः = ज्योतिर्गमयः

पुनः + अत्र = पुनस्त्र

4. **रेफ लोप संधि**

(i) ("रोरि"')

अर्थ – यदि र् (:) के बाद र् हो तो पूर्व र् का लोप हो जाता हैं।

(ii) **"ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घाऽणः"**

अर्थ – ढ् या र् का लोप होने की स्थिति में उससे पूर्व अण्

(अ, इ, उ) स्वरों का दीर्घ आ, ई, ऊ हो जाता हैं।

यथा – (पुनः) पुनर् + रमते = पुनारमते

(कविः) कविर् + राजते = कवीराजते

(भानुः) भानुर् + राजते = भानू राजते

सन्धियों के अन्य उदाहरण

(दीर्घ स्वर सन्धि)

दैत्य + अरिः = दैत्यारिः

विष्णु + उदयः = विष्णूदयः

श्री + ईशः = श्रीशः

विद्या + अर्थीः = विद्यार्थीः

परम + अर्थः = परमार्थः

देव + आलयः = देवालयः

विद्या + आलयः = विद्यालयः

ज्ञान + अर्जनम् = ज्ञानार्जनम्

विद्या + अभ्यासः = विधाभ्यासः

गौरी + ईशः = गौरीशः

रवि + इन्द्र = रवीन्द्रः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः

कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः

लघु + उत्तरम् = लघूतरम्

भू + उदयः = भूदयः

चमू + ऊर्जः = चमूर्जः

कर्तृ + ऋद्धिः = कर्तृद्धि

गम्लृ + लृकारः = गम्लृकारः

पद्लृ + लृकारः = पद्लृकारः

(गुण स्वर सन्धि)

नर + ईशः = नरेशः

देव + ईश्वरः = देवेश्वरः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

रमा + ईशः = रमेशः

रम्भा + उरुः = रम्भोरुः

मया + उक्तं = मयोक्तंगंगा+ उर्मिः = गंगोर्मिः

चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः

भारत + ऋषभः = भारतर्षभः

सदा + ऋणः = सदर्णः

कृष्ण + ऋद्धिः = कृष्णर्द्धिः

उत्तम + ऋणः = उत्तमर्णः

सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः

देव + ऋषिः = देवर्षिः

मम + लृकारः = ममल्कारः

तथा + लृकारः = तथल्कारः

कदा + लृकारः = कदल्कारः

(वृद्धि सन्धि)

मम + एकः = ममैकः

सदा + एव = सदैव

अत + एवः = अतैवः

जल + ओधः = जलौधः

प्र + औषति = प्रौषति

कृष्ण + औत्कण्ठयम् = कृष्णौत्कण्ठ्यम्

महा + औत्सुक्यम् = महौत्सुक्यम्

वृद्धि सन्धि के कुछ विशेष उदाहरण (अपवाद)

उप + एति = उपैति

उप + एधते = उपैधते

प्रष्ठ + ऊहः = प्रष्ठौहः

विश्व + ऊहः = विश्वौहः

स्व + ईरी = स्वैरी

प्र + ऋणम् = प्रार्णम्

कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम्

प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति

प्र + एष्यः = प्रैष्यः

अक्ष + ऊहिनी = अक्षोहिणी

(यण् सन्धि)

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः

धातृ + अंशः = धात्रंशः

मधु + अरिः = मध्वरिः

लृ + आकृतिः = लाकृतिः

Unleash the topper in you

प्रति + उवाच = प्रत्युवाच
तानि + एव = तान्येव
धस्लृ + आदेशः = धस्लादेशः
लृ + अक्ष्यः = लक्ष्यः
नन्दिनी + अनुचरो = नन्दिन्यनुचरो
इति + उवाच = इत्युवाच
नदी + उदकम् = नद्युदकम्
वाणी + एका = वाण्येका
वधू + आगमनम् = वध्वागमनम्
सु + अस्ति = स्वस्ति
गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा
अनु + अयः = अन्वयः
तनु + अंगी = तन्वंगी
नारी + एका = नार्येका
गौरी + आत्मजः = गौर्यात्मजः
पार्वती + अधुना = पार्वत्यधुना

(अयादि सन्धि)

जे + अते = जयते
शे + अनम् = शयनम्
मुने + ए = मुनये
कवे + ए = कवये
भो + अनम् = भवनम्
श्रो + अनम् = श्रवणम्
वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः
गै + अकः = गायकः
तस्यै + इमानि = तस्यायिमानि
नद्यै + इह = नद्यायिह
पर्वतौ + इव = पर्वताविव
मुनौ + आगते = मुनावागते
द्वौ + अत्र = द्वावत्र
गुरौ + उत्कः = गुरावुत्कः
द्वौ + एव = द्वावेव
गो + यूतिः = गव्यूतिः

अयादि सन्धि के विशेष उदाहरण

भो + यम् = भव्यम्
लौ + यम् = लाव्यम्

(पररूप सन्धि)

लाङ्ल + ईषा = लाङ्लीषा
शक् + अन्धुः = शकन्धुः
मार्त + अण्डः = मार्तण्ड़ः
हल + ईषा = हलीषा
पतत् + अंजलिः = पतGजलिः

(पूर्वरूप सन्धि)

ते + अपि = तेऽपि
गृहे + अस्मिन् = गृहेऽस्मिन्
सर्वे + अपि = सर्वेऽपि
ते + अकर्मकाः = तेऽकर्मकाः
गो + अग्रम् = गोऽग्रम्
गुरो + अस्मिन् = गुरोऽस्मिन्
अधीते + अत्र = अधीतेऽत्र
वृक्षे + अपि = वृक्षेऽस्मिन्

1. **(श्चुत्व सन्धि)**

रामस् + च = रामश्च
सत् + चित् = सच्चित्
सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्
शरत् + चन्द्रः = शरच्चन्द्रः
तत् + शिव = तच्शिवः
अरीन् + जयति = अरीGजयति
जलात् + जायते = जलाज्जायते
तत् + चेत् = तच्चेत्

अपवाद

विश् + नः = विश्नः (श् के बाद के न को ञ नहीं)
प्रश + नः = प्रश्नः (न् को ञ नहीं)
जश् + त्वम् = जश्त्वम् (त् को च् नहीं)
अश् + नित्यम् = अश्नित्यम् (न् को ञ् नहीं)
अश् + नाति = अश्नाति (न् को ञ् नहीं)

2. **(ष्टुत्व सन्धि)**

हरिस् + टीकते = हरिष्टीकते
रामस् + टीकते = रामष्टीकते
ज्योतिस् + षष्ठम् = ज्योतिष्षष्ठम्
षस् + ठी = षष्ठी
पचन् + ढौकते = पचण्ढौकते
कृष् + नः = कृष्णः
उद् + डीन्ः = उड्डीनः

विवस्वान् + डयते = विवस्वाण्डयते

आकृष् + तः = आकृष्टः

पुष् + तिः = पुष्टिः

षट् + नवतिः = षण्णवतिः

तत् + टीका = तट्टीका

इतः + षष्ढः = इतषष्ढः

विष् + नुः = विष्णुः

अपवाद् – (ट वर्ग या षकार नहीं होता हैं।)

षट् + सन्तः = षट्सन्तः

षट् + ते = षट्ते

षट् + सन्ति = षट् सन्ति

3. जश्त्व सन्धि

अच् + अन्तः = अजन्तः

दिक् + गजः = दिग्गजः

जगत् + ईशः = जगदीशः

दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः

आरभ् + धम् = आरब्धम्

वाक् + ईशः = वागीशः

कञ्चित् + दूरम् = किंचिद्दूरम्

षट् + रिपवः = षड्रिपवः

वाक् + रसः = वाग्रसः

उत् + देशः = उद्देशः

वाक् + ईश्वरी = वागीश्वरी

दिक् + गजः = दिग्गजः

4. (अनुनासिक सन्धि)

सत् + मतिः = सन्मतिः

एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः

धिक् + मूर्खम् = धिङ्मूर्खम्

सत् + मार्गः = सन्मार्गः

वाक् + मयः = वाङ्मय

वाक् + मात्रम् = वाङ्मात्रम्

तद् + मात्रम् = तन्मात्रम्

चिद् + मात्रम् = चिन्मात्रम्

चिद् + मयम् = चिन्मयम्

अप् + मयम् = अम्मयम्

5. (पूर्व स्वर्ण सन्धि)

पूर्वसवर्ण	जश्त्व
वाक् + हीन : = वाग्घीनः	वाग्हीनः
वणिक् + हसति = वणिग्घसति	वणिग्हसति
अच् + हीनः = अज्झीन्ः	अज्हीनः
अच् + हलौ = अज्झलौ	अज्हलौ
षट् + हयाः = षड्ढयाः षड्हयाः	
मधुलिट् + हसति = मधुलिड्ढसति	मधुलिड्हंसति
तत् + हितम् = तद्धितम्	तद्हितम्
अप् + हरणम् = अब्भरणम्	अब्हरणम्
सम्पद् + हर्षः = सम्पद्धर्षः	सम्पद्हर्षः

6. (लत्व सन्धि)

तत् + लयः = तल्ल्यः

उद् + लेख = उल्लेखः

विधुत् + लेखा = विधुल्लेखा

विपद् + लीनः = विपल्लीनः

यद् + लक्षणम् = यल्लक्षणम्

महान् + लेखः = महाँल्लेखः

विसर्ग सन्धि

1. (सत्व सन्धि)

सरः + तीरम् = सरस्तीरम्

इतः + ततः = इतस्ततः

नमः + ते = नमस्ते

देवः + त्राता = देवस्त्राता

कः+ चित् = कश्चित्

नरः + चलति = नरश्चलति

रामः + च = रामश्च

वृक्षः + छादयति = वृक्षश्छादयति

हरिः + शेते = हरिश्शेते

निः + छलः = निश्छलः

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः

बालः + षष्ठः = बालषष्ठः

रामः + टीकते = रामष्टीकते

ठगः + ठगति = ठगष्ठगति

2. (उत्व सन्धि)

बालः + अस्ति = बालोऽस्ति

कः + अयम् = कोऽयम्

रामः + अपि = रामोऽपि

देवः + अत्र = देवोऽत्र

काकः + अयम् = काकोऽयम्

नरः + अवदत् = नरोऽवदत्

(हशि च)

शिवः + वन्द्यः = शिवोवन्द्यः

मनः + रथः = मनोरथः

तपः + भूमिः = तपोभूमिः

पयः + दः = पयोदः

3. (रुत्व सन्धि)

आयुः + वेदः = आयुर्वेदः

गुरोः + ज्ञानम् = गुरार्ज्ञानम्

धनुः + वेदः = धनुर्वेदः

वायुः + वाति = वायुर्वाति

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा

तैः + अपि = तैरपि

धेनुः + धावति = धेनुर्धावति

मुनिः + अवदत् = मुनिरवदत्

4. (रेफ लोप सन्धि)

(हरिः)

हरिर् + रम्यः = हरीरम्यः

शम्भुर् + राजते = शम्भूराजते

निर् + रोगः = नीरोग

निर् + रवः = नीरवः

निर् + रसः = नीरसः

कविर् + रचयति = कवीरचयति

Toppersnotes
Unleash the topper in you